International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(4): 34-36

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(4): 34-36
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 10-04-2015
Accepted: 04-05-2015

रवीन्द्र सत्यवली
शोधच्छात्र संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

Correspondence
रवीन्द्र सत्यवली
शोधच्छात्र संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

व्याकरण परम्परा को आचार्य पद्मनाभदत्त का योगदान

रवीन्द्र सत्यवली

पाणिनि रचित अष्टाध्यायी संस्कृत वाङ्मय का एक अमूल्य ग्रन्थ है। पाणिनि के परवर्ती काल में व्याकरण के अनेक सम्प्रदाय प्रचलित हुए। शिष्ट समाज में **'त्रिमुनि व्याकरणम्'** के तन्त्र में अप्रमाणित कोई भी नूतन शब्द अपशब्द की श्रेणी में रखा जाता था, सामाजिक एवं सांस्कृतिक तन्त्र के विकसित होने के कारण नित नये शब्दों का प्रयोग बढ़ रहा था। इन नूतन शब्दों को लोक प्रयोग में लाने के लिए पाणिनीयेतर व्याकरणों की रचना हुई। कुछ व्याकरण ग्रन्थों का प्रणयन संस्कृत व्याकरण को सरलतम ढ़ंग से शिक्षार्थियों को सिखाने के लिए हुआ और कुछ ग्रन्थ बहुत विशालकाय बने, जिनमें पाणिनि से लेकर उस समय तक भाषा की प्रगति में आए शब्दों का विवरण था।

उत्तरकाल में यद्यपि रचियताओं ने अपने ग्रन्थों में पूर्णता लाने के लिए यथाशक्ति पूर्ण प्रयत्न किये तथा प्रणयनकालीन परिस्थितियों में शास्त्र की उपयोगिता को दृष्टिगत कर अपने–अपने शास्त्रों का प्रणयन किया, तथापि कोई भी व्याकरणशास्त्र पाणिनीय अष्टाध्यायी को अतिक्रान्त न कर सका।

पाणिनीयेतर व्याकरणों का एकमात्र उद्देश्य था कि सरल शैली में व्याकरण की क्लिष्टता तथा जटिलता को दूर करना, ऐसे में बंगाल, मालवा और गुजरात प्रदेश में व्याकरण ग्रन्थ रचे गये। इनमें जैन तथा बौद्ध सम्प्रदायों के कतिपय आचार्यों ने अपने–अपने सम्प्रदायों के अनुयायियों की दृष्टि से व्याकरण ग्रन्थों की रचना की।

अष्टाध्यायी के उपरान्त लगभग 16 मुख्य व्याकरणों की रचना हुई, यथा–

रचना	रचयिता
1. कातन्त्र व्याकरण	विवादास्पद ;शर्ववर्मा
2. चान्द्र व्याकरण	चन्द्राचार्य
3. जैनेन्द्र व्याकरण	देवनन्दी
4. शाकटायन व्याकरण	पाल्यकीर्ति
5. भोजीय व्याकरण ;सरस्वतीकण्ठाभरणद्ध	भोज
6. सिद्धहैमशब्दानुशासन	हेमचन्द्र सूरि
7. शब्दानुशासन	मलयगिरि
8. मुग्धबोध शब्दानुशासन	वोपदेव
9. सारस्वत प्रक्रिया	नरेन्द्र
10. सारस्वत व्याकरण	अनुभूति स्वरूप
11. सौपद्म व्याकरण ;सुपप्रव्याकरण	पद्मनाभदत्त
12. जौमर व्याकरण	जुमरनन्दी
13. हरिनामामृत व्याकरण	रूपगोपस्वामी ;जीवगोस्वामी
14. प्रबोध प्रकाश व्याकरण	बलराम पंचानन
15. प्रयोगरत्नमाला	पुरुषोत्तम विद्यावागीश
16. संक्षिप्तसार व्याकरण	क्रमदीश्वर

इसी परम्परा में सुपद्मव्याकरण का स्थान महत्त्वपूर्ण है। सुपद्मव्याकरण के रचयिता पद्मनाभदत्त हैं, यह व्याकरण बंगाली वर्णमाला के अक्षरों में विशेषकर बंगाल निवासियों के भाषाज्ञान के लिए लिखा है। सुपद्मव्याकरण पाणिनीय अष्टाध्यायी के अनुकरण पर रचित एक लक्षण ग्रन्थ है। पाणिनीयेतर व्याकरण परम्परा में पद्मनाभदत्त के योगदान पर विचार करते हैं।

आचार्य पद्मनाभदत्त

परिचय

आचार्य पद्मनाभदत्त का पाणिनि के उत्तरवर्ती वैयाकरणों में महत्त्वपूर्ण स्थान है। पद्मनाभदत्त का जन्म मिथिला के एक ब्राह्मण वंश में 14वीं शताब्दी में हुआ। इनके पिता का नाम दामोदरदत्त और पितामह का नाम श्रीदत्त था। इनकी वंश परम्परा वररुचि से प्रारम्भ होती है, जो कालिदास के साथ विक्रमादित्य के राजकवि थे। वि.सं. 1427 में पद्मनाभदत्त ने अपनी **'पृषोदरादिवृत्ति'** नामक ग्रन्थ में **'शाके शैले नवादित्ये'** में अपने वंश का परिचय दिया जो दुर्भाग्यवश वर्तमान में अनुपलब्ध है। पं. हरप्रसादशास्त्री ने लिखा है कि पद्मनाभदत्त 'भोरग्राम' के निवासी थे जो दरभंगा के कुछ मील दूरी पर स्थित था।

वंश परम्परा

स्वयं पद्मनाभदत्त ने अपनी 'पृषोदरादिवृत्ति' रचना के प्रारम्भ में अपनी वंश परम्परा के विषय में पाँच पंक्तियों में लिखा था, जो वर्तमान में अनुपलब्ध है। पद्मनाभ द्वारा ही रचित परिभाषावृत्ति शक् 1714 के हस्तलेख, जो बंगाल की 'एशियाटिक सोसाइटी' में सुरक्षित है। पं. हरप्रसाद शास्त्राी ने **Descriptive catalogs of Sanskrit manuscript** के षष्ठ अध्याय में लिखा है–

1. चञ्चलाप्यचला लक्ष्मीर्वाणी यत्र गृहे गृहे
ते विदृक्ष्यं सदा वन्दे विक्रमो यत्रा भूपतिः।
कालिदासादयस्तत्रा संख्यावन्त सहस्रशः
तेषामेको वररुचि, सर्वशास्त्र विशारदः।

2. श्रीदत्तस्तत्सुतश्चैव स्मृतिशास्त्राार्थतत्त्ववित्
तत्सुतो भवदत्तश्च वेदान्ती कविसत्तमः,
दामोदरस्तत्सुतश्च काव्यालघङ्कारकारकः
तत्सुतो पद्मनाभोऽहं मयैवैतन्निगद्यते।।

राजा विक्रमादित्य के राज्य में कालिदास आदि अनेक कवि थे उनमें वररुचि सभी शास्त्राों में निपुण थे, उनके पुत्र का नाम न्यासदत्त था जो फणिभाष्य के अर्थतत्त्व को जानने वाले थे। उनसे दुर्घट उत्पन्न हुए वे पाणिनीय अर्थतत्त्व के ज्ञाता थे, दुर्घट के पुत्र का नाम जयादित्य था, जो मीमांसाशास्त्रा में पारङ्गत थे। उनके पुत्र सांख्यशास्त्र के ज्ञाता श्रीपति और श्रीपति के पुत्र गणेश्वर काव्यशास्त्रा में पारङ्गत थे, गणेश्वर के यहाँ भानुभट्ट नामक पुत्रा हुआ, जो 'रसमञ्जरी' के कर्त्ता कहलाये, भानुभट्ट के पुत्र हलायुध हुए जो मीमांसाशास्त्रा में पारङ्गत थे। हलायुध के पुत्र श्रीदत्त थे। जो स्मृतिशास्त्र के अर्थतत्त्ववित् माने जाते हैं। उनके पुत्र भवदत्त हुए जो वेदान्ती थे तथा कवियों में उत्तम कवि माने जाते थे। भवदत्त से काव्यालंकार के रचयिता दामोदरदत्त तथा दामोदरदत्त के पुत्र पद्मनाभदत्त हुए।

पद्मनाभदत्त के वंश परम्परा का वंशवृक्ष इस प्रकार बनाया जा सकता है।

वररुचि ;कालिदास के समकालीन → न्यासदत्त ;फणिभाष्यार्थ तत्त्ववित् → जयादित्य ;मीमांसक → श्रीपति ;सांख्यशास्त्री → गणेश्वर ;काव्यशास्त्री → भानुभट्ट ;रसमञ्जरी कर्त्ता → हलायुध ;मीमांसाशास्त्र → श्रीदत्त ;स्मृतिशास्त्र → भवदत्त ;वेदान्ती–कवि → दामोदरदत्त ;काव्यालंकार कर्ता → पद्मनाभदत्त

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि पद्मनाभदत्त दामोदर के पुत्र तथा भवदत्त के पौत्र थे उनके प्रपितामह श्रीदत्त थे।

स्थिति काल

12वीं शताब्दी के प्रारम्भ में कर्नाटकीय राज्य का अन्त हो जाने पर उस समय मिथिला पर ब्राह्मण राजवंशीय नान्यादेव का शासन था। पद्मनाभदत्त का जन्म 14वीं शताब्दी में मिथिला में हुआ था। इसके अतिरिक्त पद्मनाभदत्त ने अपनी 'पृषोदरादिवृत्ति' रचना में अपने जन्मकाल के विषय में लिखा है– **'शाके शैले नवादित्ये' ;शक्सं. 1297–1375** उन्होंने अपनी पृषोदरादिवृत्ति की रचना ;वि.सं. 1427 में की थी। अतः इन कारणों से उनका जन्मकाल 14वीं शताब्दी माना जाता है।

रचनाएँ

पद्मनाभदत्त ने व्याकरणिक और साहित्यिक ग्रन्थों की रचना की थी।

व्याकरणिक ग्रन्थ– सुपद्मव्याकरण, प्रयोगदीपिका, उणादिवृत्ति, धातुकौमुदी, यङलुगादिवृत्ति, परिभाषावृत्ति।

साहित्यिक ग्रन्थ– गोपालचरितम्, छन्दोरत्न, आचारचन्द्रिका, आनन्दलहरी भूरिप्रयोगकोश।

प्रयोगदीपिका

पद्मनाभदत्त ने अपनी प्रसिद्ध रचना सुपद्मव्याकरण पर प्रयोगदीपिका नामक टीका की रचना की है। इसमें छात्राों की सुगमता के लिए कारक, सन्धि, समास, कृत तथा तद्धित प्रकरणों को उदाहरण–सहित स्पष्ट किया है, यह वृत्ति इन शब्दों के साथ प्रारम्भ होती है–

वरदं माध्वं नत्वा बालबोधय दीपिका
एषा सुपद्मकारेण प्रयोगानां विनिर्मिता।
कारकाणां च सन्धीनां समासानां समुच्चयः
कृतां च तद्धितानां च समासेनात्रकीर्तितः।।

उणादिवृत्ति

पद्मनाभदत्त ने उणादिसूत्राों पर 'उणादिवृत्ति' की रचना की। यह वृत्ति दो अध्यायों में स्वर प्रकरण तथा व्यञ्जन प्रकरण में समाहित है। उन्होंने यद्यपि उणादियों पर 'पृषोदरादिवृत्ति' की रचना स्वतन्त्रा रूप से की है। उणादिवृत्ति की रचना पद्मनाभदत्त ने शक् 1432 में की थी। इस रचना में उनकी वंश–परम्परा के विषय में भी वर्णन उपलब्ध होता है।

यङ्लुगादिवृत्ति

पद्मनाभदत्त ने अपनी 'यङलुगादिवृत्ति' रचना में 'यङ्' प्रत्यय का धातुओं के साथ विधान को स्पष्ट किया गया है। इस वृत्ति में 240 श्लोक हैं जो उन्नीसवीं शताब्दी के बंगाली हस्तलेखों में सुरक्षित उपलब्ध होते हैं।यङ्लुगादिवृत्ति का प्रारम्भ निम्न शब्दों से होता है जिससे इसकी रचना के उद्देश्य का पता चलता है–

प्रणम्य बालगोपालं पिबन्तं नवनीतकम्।
द्विजश्रीपद्मनाभेन यङ्लुको वृत्तिरूच्यते।।

पद्मनाभदत्त ने अपनी यङ्लुगादिवृत्ति रचना के पूर्ण हो जाने पर उसके अन्त में संक्षेप में लिखा है कि उन्होंने इसमें किस–किस भाग को उद्धृत किया है–

यदेवं व्याख्याते। दशगणपरिपठितः, शब्विकरणा भूवादयः, अशब्विकरणा अदादयः। एवं क्रयादयः, सनाद्यन्ताश्चेति। चकारान्नामधतोर्ग्रहणम्। तेन पुत्राकाम्यतीत्यादि।

धातुकौमुदी

पद्मनाभदत्त की रचनाओं के क्रम में धातुकौमुदी पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि यह सुपद्म व्याकरण का एक सहायक ग्रन्थ है। इस पर 'धतु–निर्णय' नाम्नी टीका लिखी गई है। यह रचना **'गणपंक्तिका'** के नाम से भी जानी जाती है, धातुकौमुदी में पद्मनाभ ने अनेक आचार्यों का नाम लिया है–

हलायुध, गोविन्दभट्ट, भट्टि, दुर्ग, त्रिलोचना, मैत्रेयी–रक्षिता तथा बोपदेव।

परिभाषावृत्ति

परिभाषावृत्ति में सुपद्म व्याकरण के सूत्रों की व्याख्या की गई है। इस वृत्ति में 750 से 800 परिभाषाएँ है जिनकी व्याख्या उन्होंने स्वयं साथ–साथ की है। इस वृत्ति के प्रारम्भिक हस्तलेख 'रॉयल एशियाटिक सोसाइटी' में सुरक्षित है, जिनका संकलन शक् 1641, 1698, 1714 और 1722 में किया गया है। इन सभी हस्तलेखों से पद्भनाभदत्त की वंश–परम्परा के साथ–साथ उनकी कृतियों के विषय में भी जानकारी मिलती है।

पृषोदरादिवृत्ति

पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में **'पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम्'** सूत्र से शब्दों के ऐसे समूह के विषय में बताया गया है जिसके लोप, आगम, वर्ण तथा विकास का शास्त्र निर्देश नहीं किया गया है, वे शब्द पाणिनि द्वारा उपदिष्ट होने पर साधु दिखाई पड़ते हैं। यथा– पृषोदरम्, बलाहकः, जीमूतः, पिशाचः इत्यादि ;काशिकावृत्ति, पद्मनाभदत्त ने उपर्युक्त पाणिनीय सूत्र को ध्यान में रखते हुए 'पृषोदरादिवृत्ति' की रचना की। यह एक स्वतन्त्र रचना है।

सुबन्तप्रक्रिया

सुबन्तप्रक्रिया भी पद्मनाभदत्त द्वारा रचित संस्कृत व्याकरण की एक रचना है इसकी रचना 500 श्लोकों में की गई है। सुबन्त–प्रक्रिया के प्रारम्भ में देवी सरस्वती की उपासना की गई है। तथा इसमें किस–किस विषय का प्रतिपादन किया गया है– इसके विषय में भी सूक्ष्म जानकारी मिलती है।

ऊँ नमः सरस्वत्यै ये धावतः सन्ति गणान्तरेषु वर्णार्थनिर्देश पदैरभिन्नाः विभिन्नशब्दप्रतिपादनार्थं रूपाणि तेषां समुदाहरिण्ये ।

सुपद्मव्याकरण : एक परिचय

सुपद्मव्याकरण संस्कृत व्याकरण पाणिनीयेतर परम्परा में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। पद्मनाभदत्त ने सुपद्म नामक एक संक्षिप्त व्याकरण लिखा था। इसकी उणादिवृत्ति में सुपद्मनाभ नाम मिलता है–

''सुपद्मनाभेन सुपद्म सम्मतं, विधिः समग्रः सुगमं समस्यते।''

उपलब्ध प्रमाणों के अनुसार उन्होंने इस पाणिनीयेतर व्याकरण को बंगाल प्रान्त में बंगाली वर्णमाला के अक्षरों में और विशेषकर बंगप्रान्तीय निवासियों के लाभ के लिए लिखा। सुपद्मव्याकरण में 2800 सूत्र मिलते हैं। पद्मनाभदत्त ने वैदिक संस्कृत से सम्बन्धित सूत्रों का उल्लेख अपने व्याकरण में नहीं किया है।

सुपद्मव्याकरण में प्रकरणानुसार सूत्रों को अध्यायों एवं पादों में नियोजित किया गया है। इसके पाँच अध्यायों में कुल 2800 सूत्र हैं जो प्रत्येक अध्याय में चार पाद की व्यवस्था से बीस पादों में विभक्त है।

सुपद्मव्याकरण में कहीं–कहीं पर महाभाष्य अथवा काशिकावृत्ति में पठित वार्तिकों को सूत्ररूप में पढ़ा गया है। सुपद्मव्याकरण में स्वर और वैदिक प्रकरणों का अभाव है। किसी–किसी स्थल में पाणिनीय सूत्र तथा उस पर रचित वार्तिक को मिलाकर एक नए सूत्र का रूप दे दिया गया है, जैसे– पाणिनि ने 'दुन्योरनुपसर्गे' व 'विभाषाग्रहः' सूत्रों तथा 'भवतेश्च वक्तव्यम्' वार्तिक के समानान्तर पद्मनाभदत्त ने 'दुन्नी–ग्रह–भुवोवानुपसर्गे' एक ही सूत्रा की रचना कर दी।

दक्षिण भारत का निवासी होने के कारण पद्मनाभदत्त के सुपद्मव्याकरण ग्रन्थ में द्वित्व की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती हैं, पूर्व में यह व्याकरण देवनागरी लिपि में प्राप्त नहीं होता था। परन्तु **1989** में पहली बार **डॉ. आर.एस. सैनी** के सम्पादन से यह व्याकरण वर्तमान में देवनागरी लिपि में उपलब्ध होता है।

सुपद्मव्याकरण के टीकाकार

सुपद्मव्याकरण की सरलता और महत्ता के कारण इस पर लगभग नौ टीकाएँ लिखी गई थी। पद्मनाभदत्त ने अपने व्याकरण पर स्वयं 'पञ्जिका' नाम्नी टीका लिखी है। इनके अतिरिक्त सुपद्मव्याकरण पर **विष्णुमिश्र, रामचन्द्र, श्रीधरचक्रवर्ती** और **काशीश्वर** ने टीकाएँ लिखी हैं। इनमें **विष्णु मिश्र** की **'सुपद्मकरन्द टीका'** सर्वश्रेष्ठ है।

डॉ. वेल्वाल्कर का मत है कि सौपद्मसम्प्रदाय के गणपाठ का निर्धारण काशीश्वर नाम के विद्वान् ने किया था और रमाकान्त नामक वैयाकरण ने इस गणपाठ पर वृत्ति लिखी थी। पद्मनाभदत्त ने 'पृषोदरादिवृत्ति' नामक एक विशिष्ट ग्रन्थ सं. 1427 वि. में लिखा। पद्मनाभ विरचित 'परिभाषावृत्ति' पर रामनाथ सिद्धान्त रचित टीका है। धर्मसूरिकृत 'परिभाषार्थप्रकाशिका' टीका का एक हस्तलेख अडियार के ग्रन्थ संग्रह में विद्यमान है।

उपसंहार

पद्मनाभदत्त ने बंग प्रान्तीयों के लिए संस्कृत व्याकरण की जटिलता को दूर करके, सुगम्य बनाने के लिए बंगाली लिपि में सुपद्मव्याकरण की रचना की। इन्होंने केवल व्याकरणिक ग्रन्थों का ही प्रणयन नहीं किया बल्कि साहित्यिक ग्रन्थों की भी रचना की। पद्मनाभदत्त का प्रमुख उद्देश्य संस्कृत व्याकरण का स्पष्ट तथा सरलतम ढंग से ज्ञान कराना तथा भाषा के विकास में आए नए–नए शब्दों का संस्कृतिकरण करना था, जो आज भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

संदर्भग्रन्थ

1. सुपद्मव्याकरण ;पद्मनाभदत्त, आर.एस. सैनी, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, 1981
2. संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास, युधिष्ठिर मीमांसक, रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़, सोनीपत
3. संस्कृत व्याकरण का उद्भव और विकास, सत्यकाम वर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1971
4. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, सं. बलदेव उपाध्याय, द्वितीय खण्ड ;वेदाङ्ग, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनउ, 2001
5. Post paninian systems of Sanskrit grammer, R.S. Saini, Parimal publication,Delhi .1999
6. System of Sanskrit grammer,S.K.Belvalkar, Poona. 1915.